ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा
2003

मात्स्यिकी और जीविकोपार्जन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोचीन - 682018

अलंकारी कवच व्यापार से रोज़गार

के.के. अप्पुकुट्टन और षोजी जोसफ
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन

मोलस्क व्यापक रूप से पाए जाने वाले जीव जात है जिन्हें मीठा पानी, खारा पानी, नमकीन पानी और जमीन पर भी पाया जाता है। समुद्री और खारा पानी वातावरण में बसने वाले मोलस्क वर्गों को खाने के लिए और अलंकारी उपयोगों के लिए उपयुक्त किए जाते हैं। विभिन्न वर्गों जैसे शंबु, शुक्ति, कांच शुक्ति, सीपी, प्रशंख, वेल्क, स्क्विड और कटल फिश को अति प्राचीन काल से लेकर मानव द्वारा खाद्य और अलंकरण के लिए उपयुक्त किया जाता है। इन वर्गों का आर्थिक उपयोग चूना उद्योग से लेकर जैव सक्रिय यौगिकों के अतिसूक्ष्म उत्पादन तक विकसित हुआ है। इसके बावजूद मानव ने मोलस्कों को पौष्टिक एवं स्वादिष्ट खाद्य के रूप में मान लिया है। भारत के समुद्र तटों असंख्य उपसागरों, खारा पानी क्षेत्रों तथा नदी मुखों में व्यापक रूप से मोलस्क संपदाएं पाई जाती हैं। भारतीय समुद्र से मुक्ता शुक्ति, प्रशंख, कांच शुक्ति, *ट्रोकस, टर्बो* और कलात्मक कवचों जैसे अलंकारी मोलस्कों का विदोहन किया जाता है।

भारत में मानव और मोलस्कों के बीच के सह संबंध का सबूत पूर्व वेदिक मोहनजेदारो, हारप्पा, अमरी, नाल, नन्दरा और रूपार काल की मानव सभ्यताओं की खुदाई के वक्त व्यक्त हो गया है, इन सबूतों में मात्र कवच नहीं, कवच से बनाई गई चूड़ियों के टुकड़े, कवच का आंतरिक भाग जिस से चूडी बनाई जाती है, सम्मिलित हैं। पौराणिक तथा काल्पनिक कहानियों, लोक कथाओं, कई प्रकार की रीति रिवाज़ों और दौत्यकला एवं राजकीय चिह्नों में इन कवचों का महत्वपूर्ण स्थान है; इसके बावजूद ये अनेक लोगों की आर्थिक कमाई का स्रोत भी हैं। कुछ चमकीले कवचों के सुन्दर टुकडों से माला बनाकर प्राचीन काल से लेकर महिलाएं अपने गले को सजाती थी और यह रिवाज़ अब भी कुछ जनजातियों के बीच चालू है। इस जमाने में भी विश्व के कई भागों में और भारत में भी कुछ विशेष जातियों या पिछडी जातियों के बीच कवच या कवच के टुकडों को पैसे के स्थान पर उपयुक्त किया जाता है। भारतीय पुराण में कवच, विशेषतः पवित्र प्रशंख को पूजा कार्यों में श्रेष्ठ स्थान दिया जाता है और इस से जुड़ी हुई विचारधाराएं भारतीय दर्शन और संस्कृति में लीन हो गई है।

भारत में समुद्री कवच की हस्तकला कवच की झुमका और चूड़ियों, जो महिलाएं उपयुक्त की जाती हैं, के निर्माण का एक मुख्य कुटीर उद्योग है। कवचों को उद्योगों के कच्चे माल के रूप में और आधुनिक युग की शिल्पकला में उपयुक्त किया जाता है। हाल के वर्षों में पोलिश किए गए समुद्री कवचों और कला वस्तुओं की मांग बढ़ रही है और भारत के दक्षिण राज्यों में विशेषतः तमिलनाडू में कवच हस्तकला के कुटीर उद्योगों के एकक शुरू किए गए हैं। तटीय गाँवों के कई मछुआरा कुटुम्ब अब कवचों के संग्रहण, संसाधन, कवच उत्पादों के निर्माण एवं विपणन द्वारा कवच कला उद्योग से जीविकार्जन करते हैं। कवचों से निर्मित साधारण शिल्प वस्तुओं में विभिन्न आकार और आकृति की मालाएं, चूडियाँ, झुमके, स्टड, दीप आवरण, कवच से बनायी दरवाज़े की पर्दा, झुमके तथा कंठ माला, पत्रभार, माला के लटकन, माला के लिए गुच्छ, ऐष ट्रे, दर्पण का ढांचा, दीपाधार, भिन्न भिन्न आकार की छोटी गुडियाएं प्रमुख है। अब भारत के विभिन्न भागों, विशेषतः पोन्डिच्चेरी, तिरुनेलवेली, टूटिकोरिन, मंडपम कैंप, कन्याकुमारी और कोवलम (तिरुवनंतपुरम) में ऊपर बतायी गई चीज़ों के निर्माण के लिए कई हस्तकला उद्योग पनपने लगे हैं। इस विपणन के लिए उपयुक्त किए जाने वाले कवचों में पाइरीन, अम्बोनियम, द्रुपा,

पत्रव्यवहार : डॉ के.के. अप्पुकुट्टन, प्रभागाध्यक्ष, मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग, सेन्ट्रल मरैन फिशरीस रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पोस्ट बोक्स सं. 1603, कोचीन - 682018

लिट्टोरिनिड्स, ओलीठस, नेरेटिड्स, वेल्क जैसे जठरपाद (गास्ट्रोपोड) और प्रशंख, शंकु कवच, कौड़ी, लाम्बिस, मेलो, हेलमेट कवच, चिकोरियस, टर्बो, ट्रोकस, म्यूरेक्स कवच जैसे बडे कवच और विविध प्रकार की द्विकपाटियाँ और *डेन्टालियम* सम्मिलित है। इनके अतिरिक्त 'फिश नेइल' या जठरपादों की झिल्ली भी निर्यात करने के उद्देश्य से संग्रहित की जाती है।

वर्तमान में कवचकला उद्योग अनेक मछुआरों विशेषतः महिलाओं को समुद्र तट से कवचों के कच्चे माल के संग्रहण से लेकर विपणन के लिए उत्पादों के पैकिंग तक के सभी कार्यों में रोज़गार के अवसर प्रदान करता है। भारत के पूर्व और पश्चिम तटों के प्रमुख मछली पकड़ केंद्रों में महिलाएं कुल ट्राल पकड के 8 से 10% तक होनेवाली उप पकडों की छँटाई में लगी हुई है। इन उप पकडों में 20 से 30 जातियों के मोलस्क दिखाए पडते हैं और इनकी अलग रूप से छँटाई करके पोताश्रय के

कवचों से निर्मित कारीगरी वस्तुएं

पास ही ढेरों में रखे जाते है। काकिनाडा, विशाखपट्टणम, चेन्नै, टूटिकोरिन, रामेश्वरम, शक्ति कुलंगरा, नीन्डकरा, कोचीन, कालिकट, मांगलूर और माल्पे के मत्स्यन पोताश्रयों में इस तरह के ढ़ेरों को पाया जाता है। इन जीवों के शरीर भाग विघटित होने पर महिलाएं कवचों को अलग अलग रूप से वर्गीकृत करके कवच व्यापारियों को सीधा या एजेन्टों द्वारा देती हैं। छँटाई और वर्गीकरण करते वक्त झिल्ली को भी अलग रूप से संग्रहित किया जाता है। कच्चे माल की छँटाई, वर्गीकरण और पैकिंग जैसे पूरा काम महिलाएं ही करती हैं। हर एक पकड़ केंद्र में पकड की मात्रा के आधार पर 100 से 250 तक महिला श्रमिक काम में लग जाती हैं।

कवच विपणन केंद्र में कच्चा माल पहुँचने पर महिलाएं इन्हें वर्गों के आधार पर अलग करके साफ करती हैं। पहले शक्त धारा से साफ करने के बाद कवच से शरीर भाग पूर्णतः निकाल देते हैं। इसके बाद पोलिशिंग के लिए कवचों के रासायनिक प्रक्रिया और वर्गीकरण किए जाते हैं। इस तरह हस्तकला के लिए तैयार होने पर कवचों का वर्गीकरण और पैकिंग महिलाओं द्वारा ही किए जाते हैं। रामेश्वरम, कीलकरै, टूटिकोरिन, तिरुनेलवेली, कन्याकुमारी और पोंडिच्चेरी पूर्व तट के कवच संसाधन के प्रमुख केंद्र हैं। इन स्थानों में ट्रकों से विभिन्न प्रकार के कवच पहुँचाए जाते हैं और कम से कम 3000-5000 मज़दूर इन क्षेत्रों में समुद्री कवचों के संग्रहण और संसाधन में लगे हुए हैं। कवचों से शिल्प वस्तुओं के निर्माण में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। महिलाएं स्वतंत्र रूप से या ग्रूपों में पोताश्रय से या एजेन्टों से कच्चा माल खरीदकर सुन्दर मालाएं, लटकन, एष ट्रे, दरवाज़े की पर्दा आदि बनाकर और कवच हस्तकला के व्यापारियों को देती हैं। कुछ महिलाएं ठेके आधार पर क्रमिक रूप से हस्तकला चीज़ें बनाकर व्यापारियों को देती हैं। व्यापारी लोग भी हस्तकला में प्रशिक्षित महिलाओं को रोज़गार देते हैं और काम की मात्रा और गुणता के अनुसार वेतन देते हैं। कुछ महिलाएं कवच व्यापारियों से कच्चा माल खरीदकर हस्तकला चीज़ें बनाकर रामेश्वरम और कन्याकुमारी में बेच देते हैं। तमिलनाडू और केरल के तटीय गाँवों में कवच व्यापार में लगी हुई महिलाओं की संख्या दिन ब दिन बढ़ती जाती है।

महिलाओं को रोज़गार प्रदान करने वाला और एक प्रमुख क्षेत्र है मोती संवर्धन और मोती उत्पादन। मोती संवर्धन आज लोकप्रिय होने के इस जमाने में रोज़गार के अवसर भी बढ़ रहे हैं। मोती उत्पादन में मोती सर्जरी, राफ्ट की तैयारी, राफ्ट का अनुरक्षण और राफ्ट में मुक्ता शुक्तियों का रख-रखाव और स्फुटनशाला कार्य जैसे कुशल कार्यों के लिए रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं। मादा मोती शुक्ति के कवच से कई शिल्प वस्तु और बटन जैसे उत्पाद बनाए जा सकते है, जिस से कुशल व्यक्ति को अपनी आजीविका के लिए रोज़गार का अवसर मिलता है। मोती और मोती उत्पादों की छँटाई और वर्गीकरण के लिए भी कुशल लोगों की ज़रूरत है। मंडपम क्षेत्र में पाम्बन

राजस्व गाँव के मुन्डालमुनै गाँव के गरीब मछुआरा लोग एम. एस. स्वामिनाथन रिसर्च फाउन्डेशन द्वारा केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) की तकनीकी सहायता से गरीब लोग आय कमाने के एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में मोती संवर्धन कार्यों में लगे हुए हैं। मोती संवर्धन कार्यक्रम में मुख्यतः तीन क्षेत्रों में प्रशिक्षित व्यक्तियों की ज़रूरत है। ये क्षेत्र हैं स्फुटनशाला कार्य, स्फुटनशाला में मुक्ता शुक्तियों का उत्पादन, सर्जरी द्वारा मुक्ता शुक्ति में केंद्रक का रोपण और केंद्रक रोपण की गई शुक्तियों का खेत में पालन। खेत की तैयारी, खेत में मुक्ता शुक्तियों का पालन जिस में शुक्तियों को अच्छी तरह साफ किया जाना है और परभक्षकों और शुक्तियों पर रहने वाले अधि प्राणिजातों और अधिपादपों को निकालकर शुक्ति स्टॉक स्वस्थ स्थिति में बनाया रखना है। मुक्ता शुक्ति पंजरों की, अगर खराब है तो मरम्मत की जानी चाहिए। केंद्रक रोपण अत्यंत कुशलता, ध्यान, प्रशिक्षित और तेज़ दृष्टि होने वाले व्यक्तियों से किया जाना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त और तेज़ आँखोंवाली लड़कियों को इस क्षेत्र में काम के अवसर मिल जाते हैं। अच्छी तरह प्रशिक्षित पेर्ल न्यूक्लिएशन तकनीशियनों की पूरे संसार में बडी मांग है। चीन, जापान तथा फिलिप्पीन्स की लड़कियाँ इस कुशल कार्य में अत्यधिक निपुण हैं।

कवच का विपणन तथा हस्तकला भारत में बहुत पुराना होने पर भी हाल ही में यह एक कुटीर उद्योग के रूप में पनपने लगा है। देश में ही कवच उत्पादों की मांग बढ़ गयी है और इसके सिवा भारत से कवच के शिल्पों और अन्य उत्पादों को निर्यात करने की मांग भी बढ़ रही है। कवच उद्योग ज़्यादतर रोज़गार के अवसर विशेषतः महिलाओं को प्रदान करता है। यह सुझाव दिया जाता है कि भारत के कई समुद्रवर्ती राज्यों, जहाँ झींगा ट्रालरों में उप पकड के रूप में कवच खूब मिलते हैं, में कवच हस्तकला स्वयं रोज़गार कार्यक्रम के अंदर महिला स्वयं सहायक ग्रूपों द्वारा की जा सकती है।

मुख्य शब्द - Keywords

मोलस्क - Mollusc (A major fish group of shell fishes)
मीठा पानी - freshwater
खारा पानी - brackish water
नमकीन पानी - salt water
शुक्ति - oyster (a Bivalve)
सीपी - clam (a Bivalve)
कांच शुक्ति - Window-pane oyster (a Bivalve)
प्रशंख - chank (a Gastropod)
वेल्क - whelk (a Gastropod)
ट्रोकस - trochus (top shells) (a Gastropod)
टर्बो - turbo (turban shells) (a Gastropod)
जैव -सक्रिय - bio-active
समुद्री कवच - sea shell
गास्ट्रोपोड (जठरपाद) - Gastropod (Shell fishes of the group Molluscs and class Gastropod)
द्विकपाटियाँ - bivalves (shell fishes of the group molluscs and class Bivalves)
डेन्टालियम - tusk shells (a Gastropod)
मुक्ताशुक्ति - pearl oyster (a Bivalve)
अधिप्राणिजात - epi-fauna
अधिपादप - epiphyte
केन्द्रक रोपण - nucleus implantation